ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /121

शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत महिला शिक्षकों के सामाजिक एवं पारिवारिक प्रस्थिति भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

*शैलजा पाण्डेय एवं **डॉ0 मनोज कुमार मिश्रा
*शोध छात्रा–समाजशास्त्र एवं **शोध पर्यवेक्षक
गनपत सहाय पी0जी0 कालेज सुलतानपुर उ0प्र0
डॉ0 रा0म0लो0 अवध वि0वि0 अयोध्या

शोध संक्षेप

वर्तमान आधुनिक भारतीय परिवेश में सशक्तीकरण का प्रयास संवैधानिक रूप से इतना शक्तिशाली होने के पश्चात भी समाज के प्रत्येक स्तर पर विमर्श का विषय बना रहा है। यह वास्तविकता है कि शैक्षिक रूप सशक्त होने के पश्चात् भी महिलायें सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर अपने अस्तित्व एवं अधिकारों के लिए निरन्तर संघर्ष कर रही हैं, लैंगिक असमानता एवं पितृसत्तामक सामन्तवादी सोंच, मूल्यों मान्यताओं सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक ढांचे में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश एवं आने वाली समस्याओं का सामना करते हुए आगे बढ़ रही हैं महिलाओं की शिक्षा समानता एवं कार्यशीलता के कारण समाज परिवर्तन के दौर में है, व्यवहारिक स्तर पर महिलायें अभी भी सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

शब्द संकेतः– कार्यशीलता, सशक्तीकरण, असमानता, भेदभाव, भागीदारी, भूमिका, निर्वहन, द्वन्द्व एवं दायित्व।

शोध पत्र

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की प्रस्थिति भारतीय समाज में अत्यन्त निम्न एवं सोचनीय रही है। महिलायें निरन्तर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत् रही हैं। किसी भी समाज की मूल प्रस्थिति आर्थिक सम्बन्धों एवं साधनों से ही तय होती है। पुरुष सत्तामक समाज में पुरुषों की अधीनता से अपनी अलग पहचान स्थापित करने तथा प्राप्त अधिकारों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने हेतु किसी भी महिला को आर्थिक रूप से सशक्त होना प्रथम बुनियादी आवश्यकता होती है। शैक्षिक रूप से सशक्त महिलायें कार्यशीलता के लिए अग्रसर हैं। कार्यशीलता कहीं न कहीं सामाजिक समानता हेतु उत्तरदायी कारक के रूप में माना जाता है। कार्यशील शिक्षक महिलायें आर्थिक रूप से सशक्त और स्वतंत्र होती हैं इसलिए परिवारिक निर्णय में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण रूप से बढ़ जाती है, जिसके कारण कार्यशील महिलाओं की सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका बढ़ जाती है, महिलायें, कार्यस्थल एवं पारिवारिक भूमिका निर्वहन के बीच द्वन्द्व की स्थिति का सामना करती हैं, कार्यशील शिक्षक महिलायें वैवाहिक एवं पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन में सफल हैं किन्तु उन्हें कार्यस्थल एवं गृहस्थ जीवन के बीच अनेक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

भारतीय महिलाओं के जीवन उत्थान एवं पतन की प्रक्रिया निरन्तर गति से प्रवाहमान रही हैं, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक महिलायें किसी न किसी रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक चिंतन का केन्द्र अवश्य रहीं हैं। भारतीय समाज में पुरुष और महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण वर्तमान औद्योगिक समाज की विशिष्टता के निर्धारित कारकों के साथ–साथ उसके जाति, वंश और वर्ण पर भी आधारित रहा है। इन पदों में सामाजिक शक्ति भी जुड़ी है। बेबर का कथन है कि ''समुदाय विशेष शक्ति निर्धारकों के रूप में वर्ग प्ररिस्थिति समूह एवं दल को स्वीकार करता है।''.....1

शैक्षिक सम्पन्नता में महिलाओं के जीवन बड़ा परिवर्तन किया है। परम्परागत समाज में जहाँ महिलाओं को शोषण किया जाता था शैक्षिक विकास के परिणाम स्वरूप उन्हें अपने अस्तित्व के बोध में जीवन जीना शिखा दिया, शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार में महिलाओं के जीवन में भौतिकवादी विचारधारा एवं आर्थिक स्वतंत्रता में परम्परागत वर्न्धनों से मुक्त भी प्रदान कर उसे व्यवसायिक जगत में स्थान दिला दिया। कार्यशील महिलाओं के समक्ष सामाजिक सांस्कृतिक आदर्शों के साथ–साथ पारिवारिक संबन्धों में भी तनाव एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है। कार्यशील महिला शिक्षकों को सामाजिक जीवन में दोहरी भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। ''कार्यशीलता का आशय घरों से बाहर नियमित रूप से आर्थिक और व्यवसायिक गतिविधियों के साथ नौकरी पेशें में संलग्न हैं। उन्हें कार्यशील या कार्यरत महिलायें कहा जाता है।''..[2]

भारत मे महिला श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति के अध्ययन में एस0आर0 देश पाण्डेय ने कहा है कि ''क्या महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अच्छी हो रही है अथवा नहीं? कार्य की अवधि में इनके समक्ष कौन–कौनसी समस्यायें आती है जिनका इन्हें सामना करना पड़ता है? कार्य के प्रति इनमें संतोष है अथवा असंतोष के क्या कारण हैं? कार्य के प्रति इनकी दृष्टि क्या है? कार्य के प्रति महिला कटिबद्धता के कारण क्या हैं? इत्यादि पक्षों को दृष्टिगत किया जा सकता है।''....[3]

प्रोमिला कपूर ने शिक्षित एवं रोजगार युक्त हिन्दू महिलाओं पर एवं सामाजिक एवं मनावैज्ञानिक अध्ययन में शिक्षा रोजगार को स्वतंत्र सामाजिक चर के रूप में लिया है और मनोवृत्ति को आश्रित चर के रूप देखा है।....[4]

एस.सी. दुबे ने अपने अध्ययन में पाया कि– ''भारतीय प्रस्थिति एवं भूमिका का परम्परागत दृष्टिकोण अब बदल रहा है। इन परिर्वतनों का मुख्य कारण आधुनिक शिक्षा, औद्योगिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता और नवीन आर्थिक प्रतिमान है।''....[5]

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध अध्ययन अमेठी जनपद के अमेठी तहसील (कस्बे) एवं ब्लाक के समस्त चयनित ग्रामीण एवं नगरीय परिक्षेत्र के समस्त सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में से कुल 200 शिक्षकाओं का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है। इस अध्ययन को उत्तम बनाने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतो की सहायता से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

अध्ययन की परिकल्पनाः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. महिला शिक्षिकाओं का पारिवारिक जीवन अधिक संघषमय होता है।
2. कार्यशील महिलायें स्वयं के लिए वक्त नहीं निकाल पाती है।
3. शिक्षिकाओं पर स्कूल और परिवार का अत्यधिक भार होता है। जिससे उनके अन्दर चिड़चिड़ेपन एवं गुस्से की समस्या देखी गयी है।
4. शिक्षिका यदि विवाहित और बच्चेवाली है तो बच्चों की पालन–पोषण की समस्या का निदान उचित रूप से नहीं कर पाती है।
5. स्कूल में बुनियादी सुविधायें तथा भेदभावपूर्ण रवैया अपनाये जाने के कारण महिलाओं के अन्दर असुरक्षा की भावना पायी गयी है।
6. विवाहित शिक्षिकाओं की अपेक्षा अविवाहित शिक्षिकायें अधिक प्रसन्न दिखाई पड़ती हैं।
7. वेतनभोगी होने की वजह से उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।
8. महिलाओं के शैक्षिणिक पदों पर कार्य करने से परिवार में सम्मान तो बढ़ा ही है साथ में पारिवारिक एवं सामाजिक समस्यों भी बढ़ी है।

उपर्युक्त संदर्भों के साथ शैक्षिणिक संस्थाओं में कार्यरत महिला शिक्षकों के सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका का प्रभाव महिलाओं के जीवन एवं कार्यशैली पर किस प्रकार पड़ रहा है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या ''शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत महिला शिक्षकों के सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका एवं प्रस्थिति उच्च हुई है?'' निम्न सारिणी के माध्यम से उत्तरदाताओं का विचार जानने का प्रयास किया गया है–

सारिणी 1.0

क्र.सं.	सामाजिक प्रस्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	182	60.67
2.	नहीं	60	20.00
3.	कह नहीं सकते	58	19.33
	योग	300.00	100.00

उपर्युक्त सारिणी संख्या– 1.0 के अध्ययन में सम्मिलित शैक्षिणिक कार्यों में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या ''शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत महिला शिक्षकों की सामाजिक प्रथिति उनकी कार्यशीलता कारण उच्च हुई है? उसी क्रम में सम्पूर्ण 300 सूचनादाताओं में से कुल 182(60.67 प्रति0) है। उत्तरदात्रियों का कथन है कि हाँ उनकी सामाजिक प्रस्थिति उनकी कार्यशीलता के कारण उच्च हुई है एवं 60(20.00 प्रति0) उत्तरदात्रियाँ ऐसा नहीं मानती हैं जबकि 58(19.33 प्रति0) उत्तरदात्रियों ने संदर्भ में कुछ भी कहने से इंकार कर दिया है।

अतः सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत महिला शिक्षकों की भूमिका एवं प्रस्थिति उनकी कार्यशीलता के कारण अवश्य ही उच्च हुई है। क्योंकि भारतीय समाज में एक शिक्षक को गुरू के रूप में स्वीकार किया गया है, गुरू की महत्ता समाज में सर्वोच्च रही हैं पुरुष हो अथवा स्त्री शैक्षिणिक कार्यों के कारण उनका सामाजिक आदर्श उच्च हो जाता है।

सारिणी 2.0

शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं का कार्य के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोणः–

क्र.सं.	कार्य के प्रति दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अच्छा	210	70.00
2.	खराब	60	20.00
3.	बहुत खराब	30	10.00
	योग	300.00	100.00

उपरोक्त सारिणी संख्या–2.0 के अध्ययन में सम्मिलित शैक्षिणिक कार्यों में संलग्न महिलाओं के कार्य के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया है? के क्रम में सम्पूर्ण 300 उत्तरदात्रियों में से 210(70.00प्रति0) उत्तरदात्रियों ने माना है कि हाँ उनके कार्य के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोण बहुत अच्छा रहता है। एवं 60(20.00प्रति0) उत्तरदात्रियाँ मानती है कि परिवार दृष्टिकोण उनकी कार्यशीलता के प्रति व्यवहार खराब रहा है जबकि 30(10प्रति0) उत्तरदाता मानते है कि महिलाओं की कार्यशीलता के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोण बहुत खराब रहता है।

अतः सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान भौतिकवादी परिवेश में शैक्षिणिक संस्थाओं में संलग्न शिक्षक महिलाओं के प्रति परिवार का दृष्टिकोण बेहतर हुआ है। महिलाओं के भूमिकाओं में परिवर्तन में अब समाज स्वीकार करने लगा है।

संदर्भ सूची

1. **मैक्स वेबरः** ''द थ्योरी ऑफ सोशल एण्ड इकोनॉमिक आर्गनाईजेशन'' **टालकट पारसन्सः** ''द फ्री प्रेस ऑफ श्लैंको न्यूयार्क, पृ0सं0–380.
2. **गुप्ता सुभाष चन्द्र,** कार्यशील महिलायें एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली पृ0सं0–3.
3. **देश पाण्डेय एस0आर0ः** ''इकोनॉमिक एण्ड सोशल स्टेटस ऑफ वीमेन वर्कस इन इण्डिया, गर्वमेंट ऑफ इण्डिया लेबर व्यूरो मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एण्ड इम्प्लायमेन्ट पब्लिकेशन नं0–15–1953.
4. **कपूर प्रोमिलाः** ''सोशियों साइकोलाजिकल स्टडी ऑफ द चेंज इन इन्टीट्यूशन ऑफ एजूकेटेड इयरिंग हिन्दू वीमेन, यूनिवर्सिटी ऑफ आगरा–1960.
5. **दूबे एस0सी0ः** मैन एण्ड वीमेन रोल इन इण्डिया–1963.